ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

# "खेतड़ी की ऐतिहासिक धरोहर और सांस्कृतिक पर्यटन: एक सामान्य अध्ययन"

डॉ. रामचेत यादव, मानविकी एवं समाज विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
विरेन्द्र कुमार चान्देला, शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

राजस्थान के झुंझुनू जनपद में स्थित खेतड़ी एक ऐसा क्षेत्र है, जो ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसे प्राचीनकाल से ही "ताम्र नगरी" तथा "झुंझुनू का प्रवेश द्वार" कहा जाता है। खेतड़ी अपने भव्य दुर्गों, राजसी महलों, प्राचीन मंदिरों एवं समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के लिए सुविख्यात है। इसकी सांस्कृतिक धरोहर पर्यटकों को आकर्षित करने में पूर्णतः सक्षम है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य एक व्यापक केस स्टडी के माध्यम से खेतड़ी क्षेत्र में स्थित ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत स्थलों की सम्यक जानकारी एकत्रित करना तथा उनमें पर्यटन की संभावनाओं का विश्लेषण करना है। यह अनुसंधान सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने और उसे सतत रूप से बनाए रखने में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान करता है तथा भविष्य के विकास हेतु उचित सुझाव भी प्रस्तुत करता है।

इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष खेतड़ी में आर्थिक विकास तथा सांस्कृतिक संरक्षण को परस्पर पूरक मानते हुए, सांस्कृतिक पर्यटन को क्षेत्रीय प्रगति के एक प्रभावशाली साधन के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करते हैं। यह शोध खेतड़ी में पर्यटन विकास की संभावनाओं एवं बाधाओं को समझने में उपयोगी सिद्ध होगा।

खेतड़ी, अपनी जीवंत ऐतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक गरिमा के कारण, देशी एवं विदेशी पर्यटकों को सदैव आकर्षित करता रहा है। इसके प्राकृतिक सौंदर्य की रमणीयता तथा भौगोलिक विविधता इसे अन्य क्षेत्रों से विशिष्ट बनाती है। यहाँ मरुस्थलीय भूमि, अरावली पर्वत श्रृंखला की सुरम्य पहाड़ियाँ एवं समतल मैदान—तीनों प्रकार की स्थलीय संरचनाएँ विद्यमान हैं। ऊँचे-ऊँचे टीलों और पर्वतों का अद्भुत संगम यहाँ की भौगोलिक छवि को दर्शनीय बनाता है।

खेतड़ी की विविध वनस्पतियाँ, पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ एवं प्राकृतिक आकर्षण इस क्षेत्र को विशेष स्थान प्रदान करते हैं। इन भौगोलिक विशेषताओं के साथ-साथ यहाँ की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत पर्यटन को बढ़ावा देने की अत्यधिक संभावनाएँ प्रदान करती है। यही कारण है कि खेतड़ी को सांस्कृतिक पर्यटन के एक उदीयमान केन्द्र के रूप में देखा जा सकता है।

**खेतड़ी में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन के आकर्षण**

खेतड़ी सांस्कृतिक पर्यटन के विविध आयामों का भंडार है, जहाँ आगंतुकों को ऐतिहासिक गौरव, स्थापत्य-कला, धार्मिक विश्वास और सांस्कृतिक विविधता का एक अद्भुत समागम देखने को मिलता है। इसके ऐतिहासिक स्थल, धार्मिक तीर्थ, पारंपरिक मेले और उत्सव न केवल क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को उजागर करते हैं, अपितु पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण आकर्षण का केंद्र बनते हैं। यह खंड इन स्थलों की महत्ता, उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्य तथा उनके पर्यटन-आकर्षण पर प्रकाश डालता है।

सुनारी सभ्यता — खेतड़ी तहसील के अंतर्गत कांटली नदी के तट पर अवस्थित सुनारी एवं जोधपुरा नामक ग्रामों से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य इस क्षेत्र की प्राचीन ऐतिहासिकता का परिचायक हैं। उत्खननों के दौरान यहाँ लौह अयस्क से धातु निष्कर्षण हेतु प्रयुक्त प्राचीन भट्टियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि यहाँ लौह धातु का उत्पादन एवं उससे औजार निर्माण प्राचीन काल में ही आरंभ हो चुका था। इन स्थलों से शुंग और कुषाण कालीन सभ्यता के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो खेतड़ी क्षेत्र की प्राचीन संस्कृति एवं धातु-कला की निरंतरता को दर्शाते हैं।

**भोपालगढ़ दुर्ग** — खेतड़ी का प्रमुख किला, जिसे भोपालगढ़ के नाम से जाना जाता है, राजवंशीय गौरव और स्थापत्य सौंदर्य का अनुपम उदाहरण है। यह दुर्ग खेतड़ी के तत्कालीन शासकों द्वारा निर्मित एक ऐतिहासिक कृति है, जो आज भी अपनी भव्यता और वैभव के लिए स्मरणीय है। इस किले के अंतर्गत स्थित शीशमहल, मोती महल, गोपीनाथ मंदिर, शिव मंदिर एवं रानी सती मंदिर वास्तुकला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करते हैं। इन इमारतों की भित्ति चित्रकारी, जटिल नक्काशी और अलंकरण युक्त स्थापत्य शैली पर्यटकों को अभिभूत कर देती है। किंतु दुर्भाग्यवश वर्तमान में यह ऐतिहासिक धरोहर उपेक्षा और

जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है, जिसे संरक्षण की अत्यंत आवश्यकता है।

**फतेह विलास महल (रामकृष्ण मिशन केंद्र)** — खेतड़ी का यह ऐतिहासिक महल, जो पूर्व में खेतड़ी के राजपरिवार का निवास स्थान था, वर्तमान में रामकृष्ण मिशन के आध्यात्मिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित है। खेतड़ी के अंतिम शासक राजा सरदार सिंह जी द्वारा वर्ष 1958 में यह महल रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ को दान कर दिया गया था। इसके उपरांत 1959 में यहाँ राजस्थान की पहली रामकृष्ण मिशन शाखा की स्थापना हुई। यह स्थल न केवल ऐतिहासिक महत्त्व रखता है, बल्कि यह स्वामी विवेकानंद जी के जीवन से भी गहराई से जुड़ा है।

महल के उसी कक्ष को, जहाँ स्वामी विवेकानंद निवास करते थे, प्रार्थना-कक्ष में परिवर्तित कर दिया गया है। परिसर में स्वामी विवेकानंद की संगमरमर की भव्य प्रतिमाएँ स्थापित हैं। यहाँ अजीत-विवेक संग्रहालय भी स्थित है, जिसमें स्वामी विवेकानंद और राजा अजीत सिंह से संबंधित चित्र, पत्र, पांडुलिपियाँ तथा पुस्तकों का संग्रह प्रदर्शित किया गया है।

बागोर का किला खेतड़ी से लगभग तीन मील दूरी पर स्थित यह प्रसिद्ध किला है । राजस्थान के प्रसिद्ध गढ़ चित्तौड़गढ़ और रणथंबोर की तरह बागोर का किला भी दुर्गम और प्राचीनता का प्रतीक है । प्राचीर की ओट में किला अपने आप में इतना आत्मनिर्भर और सुरक्षित बना है कि इसमें शानदार महल वह बगीचा भी था । बाद में खेतड़ी के राजाओं का प्रमुख आश्रय स्थल बन गया था । बागोर का किला अपनी मजबूती के लिए प्रसिद्ध था, किला इतना लंबा चौड़ा है जिसमें पूरा शहर भी बस सकता था और खेती भी की जा सकती थी । आज यह किला संरक्षण व पुनरोद्धार की बाट जोह रहा है । इसके अलावा बबाई, सिहोड़ आदि में भी स्थानीय ठाकुरों के अधीन छोटे किले बनाए गए थे जो आज जीर्ण शीर्ण अवस्था में है, जिनके पुनरुद्धार की जरूरत है

**खेतड़ी क्षेत्र के प्रमुख ऐतिहासिक जल संरक्षण के स्थल-**

खेतड़ी के ऐतिहासिक तालाब , कुएं-बावड़िया और बांध जल संरक्षण के बेजोड़ उदाहरण है । खेतड़ी के राजा महाराजाओं एवं सेठ साहूकारों ने यहां पर जल संरक्षण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया । ऐतिहासिक पन्ना सागर तालाब जिसका निर्माण सेठ पन्नालाल शाह ने करवाया था । यह तालाब अपनी कलाकृति एवं भव्यता का बेजोड़ नमूना है । इसके चारों ओर ऊंची दीवारें, स्त्रियों और पुरुषों के लिए अलग-अलग घाट, परिभ्रमण के लिए चारों तरफ पक्का फर्श, रहने के लिए बारहदरी तथा तिबारियां बनी हुई है । तालाब पर विष्णु भगवान की जगह-जगह मूर्तियां लगी हुई । बारिश के पानी संग्रहण का यह पूरे विश्व में एक अद्भुत उदाहरण है । तालाब के पीछे पक्की नहरें बनी हुई हैं । नहरों के बीच में प्राकृतिक फिल्टर प्लांट लगा हुआ है, जो तत्कालीन समय का वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम व वर्षा जल संग्रहण का बेजोड़ नमूना है । यह भारत के सबसे सुंदर तालाबों में से एक है, जो पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करता है

महाराजा अजीतसिंह सिंह द्वारा बनवाया गया अजीत सागर बांध जो झुंझुनू जिले का सबसे बड़ा बांध है । यद्यपि आज बांध के कैचमेंट क्षेत्र में बने एनीकट, विलायती कीकर व कम बरसात के कारण बांध सूखा पड़ा । इनके अलावा माझी शाह बांध, काला भुजा बांध, समदेड़ा तालाब ऐतिहासिक एवं जल संरक्षण के स्रोत थे । तालाब व बांधों के अलावा यहां की बावड़िया भी ऐतिहासिक रही है, जिनमें बबाई की सात मंजिला बावड़ी जो वर्तमान में जीर्ण शीर्ण अवस्था में है एवं जसरापुर की बावड़ी प्रसिद्ध है ।

**खेतड़ी तांबा प्रोजेक्ट** - खेतड़ी में तांबा हड़प्पा सभ्यता के काल से ही निकाला जा रहा है, हड़प्पा स्थलों पर तांबा यहीं से भेजा जाता था । खेतड़ी तांबा प्रोजेक्ट की स्थापना 1967 में की गई । इसके बाद यहां वृहद स्तर पर तांबे की खुदाई की गई । यहां की प्रसिद्ध खानों में खेतड़ी की खदान, बनवास एवं कोलिहान की खान प्रसिद्ध है ।

**प्रमुख धार्मिक स्थल मंदिर व तीर्थ स्थल** -

खेतड़ी शहर के प्रमुख धार्मिक मंदिरों में देखा जाए तो रघुनाथ जी का मंदिर जो एक ऐतिहासिक मंदिर है, जिसमें भगवान श्री राम एवं लक्ष्मण के विग्रह को मूंछों में दिखाया गया है । संभवतः ऐसा प्रदेश का एकमात्र मंदिर है । वाराही माता का एकमात्र ऐतिहासिक मंदिर जिसमें मां वार्ताली वाराही के अवतार में मनुष्य के शव पर विराजमान है । खेतड़ी-नीमकाथाना रोड पर झोझू धाम में प्रसिद्ध सिद्धि विनायक

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

मंदिर जो लोगों का आस्था का केंद्र है । हनुमानगढ़ी मंदिर जो संभवतः अयोध्या के बाद प्रदेश का एकमात्र हनुमानगढ़ी का मंदिर है । ये सभी मंदिर धार्मिक एवं पर्यटन दोनों ही दृष्टि से प्रमुख स्थल है ।

रामेश्वरदास मंदिर राजस्थान हरियाणा सीमा पर स्थित बसई गांव में यह बड़ा ही भव्य मंदिर है । दुग्धभागा नदी के किनारे बना यह रमणीक धाम बाबा रामेश्वरदास की तपो स्थली रहा है । यहां काफ़ी भव्य मूर्तियाँ है । यहां नंदी जी की **25** फुट लंबी, **15** फुट ऊँची व **20** फुट चौड़ी भव्य प्रतिमा स्थापित है । **10** फुट ऊँचा शिवलिंग है, जहां भक्तजन पानी चढ़ाते है । मंदिर के मुख्य द्वार पर **40** फुट ऊँची हनुमान जी की मूर्ति स्थापित है । रामेश्वरदास मंदिर परिसर में श्री गणेश जी की भी बहुत बड़ी प्रतिमा के साथ साथ गजानन की भी बहुत विशालकाय प्रतिमा है । एक हाल में भगवान जी की मूर्तियों कि साथ संपूर्ण रामायण में दर्शाए गए चित्रों को लगाया गया है । रामेश्वरदास मंदिर परिसर के कई और कक्षों में हिंदू धर्म की पौराणिक कथाओ को अंकित किया गया है, इनकी शोभा देखने से ही बनती है । धाम में स्थित गीता भवन में श्रीमद् भागवत गीता के **18** अध्याय शीशे में उकेर कर लिखे गए हैं । इसमें चित्रकार ने शीशे में अंदर की तरफ उल्टे शब्द लिखे हैं, जो बाहर से एक-एक सीधे दिखते हैं । इस प्रकार कलाकृति को देखने के लिए दर्शनार्थी दूर-दूर से आते हैं । सम्पूर्ण मन्दिर में दीवारों पर हजारों भित्ती चित्र बने हुए हैं । इनमे हजारों देवी-देवताओं, समस्त ऋषियों, महात्माओं, शक्ति पीठों, नव दुर्गा के चित्र बने हुए हैं ।

**रामेश्वर दास मंदिर बसई।**

**खाखी धाम**

सवाई सुंदर दास जी महाराज का मंदिर - यह मंदिर खेतड़ी के गाडराटा गांव में स्थित है । यह मंदिर दादूपंथी संत योगीराज बाबा सवाई सुंदर दास जी महाराज को समर्पित है, जो अपने आध्यात्मिक उपदेशों और समाज सेवा के लिए प्रसिद्ध थे । मंदिर पहाड़ी की तलहटी में स्थित है, पास की हरितमा युक्त पहाड़ी मंदिर की भव्यता को ओर बढ़ा देती हैं । इसके पास में ही पहाड़ी पर चामुंडा माता का प्रसिद्ध मंदिर है, जो बड़ा ही रमणीय एवं दर्शनीय स्थल है । भाद्रपद माह में बाबा सुंदर दास का पांच दिवसीय लक्खी मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से लोग दर्शनार्थ आते हैं । मेले में क्षेत्र की संस्कृति की सम्पूर्ण झलक नजर आती है ।

भूर भवानी माता का मंदिर बबाई गांव की पश्चिम दिशा में पहाड़ी पर यह बहुत ही भव्य एवं पवित्र माता का मंदिर स्थित है । बबाई की पहाड़ियां अरावली की उत्तर में स्थित सर्वोच्च पहाड़ियां हैं । मंदिर से दूर-दूर के गांवों का मनोरम नजारा देखा जा सकता है ।

खाखी बाबा मंदिर राजस्थान के झुंझुनू जिले की खेतड़ी तहसील के डाडा फतेहपुरा पंचायत में स्थित एक प्राचीन धार्मिक स्थल है । यह मंदिर लगभग 50 वर्ष पुराना है और स्थानीय भक्तों के लिए आस्था का प्रमुख केंद्र है ।

ढौसी तीर्थ स्थल राजस्थान-हरियाणा सीमा पर स्थित यह एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है, जो ढौसी गांव में स्थित है । यह स्थान विशेष रूप से वैदिक काल से जुड़ा हुआ है और यहां महर्षि च्यवन का आश्रम होने की मान्यता है । ढौसी पहाड़ी को अक्सर "च्यवन ऋषि की तपोभूमि" कहा जाता है और इसे आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध माना जाता है । ढौसी में एक प्राचीन कुंड और शिव मंदिर भी स्थित है, जहां श्रद्धालु स्नान और पूजा-अर्चना करने आते हैं । ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व का यह क्षेत्र पर्यटकों और भक्तों के लिए आकर्षण का केंद्र है ।

**ढौसी तीर्थ स्थल**

**चौमुखा भैरव मंदिर।**

**बूढ़ वाला बालाजी**

चौमुखा भैरव मंदिर खेतड़ी से 9 किलोमीटर दूरी पर खरखड़ा में प्रसिद्ध चौमुखा भैरव मंदिर है मान्यतानुसार यह भैरव (शिव भगवान का एक स्वरूप) द्वापर युग से अपना संबंध रखता है । रमणीय पहाड़ी की तलहटी में स्थित यह मंदिर लोगों को अन्नायास ही अपनी और आकर्षित कर लेता है । खेतड़ी में दूसरा प्रमुख भैरव मंदिर मोड़की ग्राम में स्थित है, जो ऊंचे टीलों एवं पहाड़ों के संगम के बीच बना हुआ है । ऊंची पहाड़ी पर स्थित मंदिर भेरुजी एवं भगवान देवनारायण का मंदिर है मान्यतानुसार यहां भगवान देवनारायण पृथ्वी को फाड़कर साक्षात प्रकट हुए थे । यहां से हमें एक ओर हरियाली से ढकी हुई ऊंची-ऊंची पहाड़ियां दिखाई देती हैं, तो दूसरी तरफ ऊंचे- ऊंचे टीले प्राकृतिक सौंदर्य की छटा बिखेरते नजर आते हैं । प्रकृति व आध्यात्मिकता का दर्शन करना हो तो यहां जरूर जाना चाहिए । अन्य मंदिरों एवं पवित्र स्थलों में बूढ़ वाला बालाजी धाम ग्राम नोरंगपुरा, शक्तिपीठ भिंठेरा, खाखी धाम मंदिर ग्राम डांडा फतेहपुरा, बाबा भैया का मंदिर ग्राम तातीजा प्रमुख हैं, जो आध्यात्मिकता के साथ साथ प्रकृति का सौंदर्य दर्शनार्थियों को प्रदान करते हैं ।

बाघेश्वर तीर्थ धार्मिक एवं भावात्मक एकता का प्रतीक बागेश्वर धाम खेतड़ी के निकट खरकड़ा गांव में दो पहाड़ों की सकरी घाटी में स्थित है यहां एक सतत प्रवाहमान जल स्रोत है, जो एक पहाड़ की खो में से निकलकर नीचे गिरता है । यहां एक प्राचीन मंदिर है, प्राचीन किवदंती के अनुसार नृसिंह भगवान ने हिरण्कश्यप का हृदय विदीर्ण करके अपने रक्त लिप्त नखों को इसी स्थान पर धोया था । आसपास के धार्मिक आस्था वाले लोग यहां आते रहते हैं ।

बागेश्वर तीर्थ के अलावा यहां अरावली की सूरम्य पहाड़ियों में अनेक सतत जल प्रवाह के स्रोत हैं, जिनके पास मंदिर एवं पवित्र कुंड बने हुए हैं । मान्यता अनुसार इन पहाड़ों में अनाम साधु संत तपस्यारत हैं । इनमें से प्रमुख धाम कुंडा धाम जो कालोटा ग्राम पंचायत के मंडाना ग्राम की पहाड़ियों में स्थित है, जहां पवित्र कुंड एवं मंदिर बने हुए हैं । इसी तरह अमरकुंड जो खेतड़ी के भोपालगढ़ किले के समीप स्थित है, जहां गोमुख से लगातार पवित्र पानी बहता रहता है । प्रतापपुरा ग्राम में आकावाली की तरफ जाने वाले रास्ते में मनमोहक कदम के पेड़ों के झुरमुट को पार करने के बाद ऊखल-मूसल नाम के पवित्र कुंड है, जहां ग्रीष्म ऋतु में भी पानी का प्रवाह बढ़ जाता है । माधोगढ़ का धारेश्वर धाम जहां गंगा के समान ही अमृत जल लगातार प्रवाह करता रहता है, बहुत ही बड़ा आध्यात्मिक स्थान है, जहां भाद्रपद माह में विशाल मेला लगता है । इस प्रकार यह तीर्थ स्थल आध्यात्मिकता के साथ-साथ प्रकृति का सौंदर्य भी निहारने का मौका हमें देते हैं । ये सभी स्थान खेतड़ी में फैली हुई अरावली पर्वतमाला की रमणीय उपत्यका में बसे हुए हैं । ये सभी तीर्थ स्थल गगनचुम्बी पहाडों की गोद में बसे प्राकृतिक सौन्दर्य के अनुपम बीज मोती से चमकते नजर आते है । हरे-भरे पहाड, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, सुरम्य और मनोहारी ये मंदिर एवं पवित्र स्थल दर्शनार्थियों और पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र है तथा ये पवित्र स्थल थके हुए पर्यटकों व दर्शनार्थियों की थकान हर लेते है।

खेतड़ी में सांस्कृतिक पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं । राजस्थान के अन्य भागों की तरह खेतड़ी भी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समृद्धि से भरपूर है, जो पर्यटन क्षमता का अधिकतम उपयोग किए जाने पर स्थानीय लोगों, राज्य और राष्ट्र के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी हो सकता है । ऐसा कोई गांव, कोई बस्ती या कोई जमीन का टुकड़ा नहीं है, जिसमें सांस्कृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक विरासत या सांस्कृतिक पर्यटन स्थल न हो । इतना होते हुए भी बहुत सी चुनौतियां है, जो इसके वैभव को प्रसारित होने में बाधा पैदा करती हैं । खेतड़ी में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने में प्राथमिक चुनौतियों में से एक अपर्याप्त बुनियादी ढांचा है, विशेष रूप से दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क संपर्क और सार्वजनिक परिवहन सहित अपर्याप्त परिवहन सुविधाएं पर्यटन स्थलों तक पर्यटकों की पहुंच को बाधित करती हैं । इसके अतिरिक्त विरासत स्थलों पर उचित आवास, आगंतुक सुविधाओं और व्याख्या केंद्रों की कमी समग्र पर्यटक अनुभव को प्रभावित करती है । खेतड़ी के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के स्थलों का वर्तमान में संरक्षण एवं देखरेख नहीं होने के कारण ये अपना वैभव खोते जा रहे हैं, जो एक चिंता का विषय है ।

खेतड़ी के आर्थिक विकास, सामुदायिक विकास और क्षेत्र की समृद्धि के लिए ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण कर सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है । क्षेत्र में केन्द्र सरकार द्वारा क्रियान्वित 'स्वच्छ भारत योजना" को नियोजित तरीके से संचालित किया जाना चाहिए, जिसके तहत जलीय पर्यटन स्थलों के साथ-साथ अन्य ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों पर स्वच्छता को विकसित किया जा सके । सांस्कृतिक विरासत और इसके संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन करना होगा । सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, कार्यशालाएं और इंटरैक्टिव अनुभव प्रदान करें, जो आगंतुकों को स्थानीय परंपराओं और रीति-रिवाजों से जुड़ने की अनुमति दें ।

सांस्कृतिक विरासत स्थलों, स्मारकों और कलाकृतियों के लिए प्रभावी संरक्षण और संरक्षण उपायों को लागू किया जाना चाहिए ।सांस्कृतिक संपत्तियों के सतत रखरखाव और सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक विरासत प्रबंधन योजनाएं विकसित करना चाहिए । खेतड़ी बांसियाल कंजर्वेशन रिजर्व का विकास किया जाये तथा राजस्थान के अन्य क्षेत्रों में बनाए जाने वाले महोत्सव जैसे मरू महोत्सव थार महोत्सव मेवाड़ महोत्सव की तरह ही खेतड़ी महोत्सव या खेतड़ी विरासत उत्सव को और भी वैभवपूर्ण बनाया जाए, जिससे यहां पर दूर-दूर के पर्यटक और अधिक आकर्षित हो सके और यहां की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ प्राकृतिक सौंदर्य को निहार सके, जो पर्यटकों एवं क्षेत्र के आम जन दोनों के लिए ही लाभदायक रहेगा और खेतड़ी के पूर्व वैभव को पुनः लौटाया जा सकेगा ।

**संदर्भ सूची-**

1. खेतड़ी का इतिहास : पण्डित झाबरमल शर्मा
2. शेखावाटी वैभव : टी. सी. प्रकाश
3. शेखावाटी उद्गार
4. शेखावाटी दैनिक भास्कर
5. झुंझुनूं पत्रिका
6. इंटरनेट
7. शेखावाटी के प्रमुख दुर्ग : श्री ताराचंद प्रकाश
8. सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार जन सामान्य, पुजारी
9. श्री ताराचंद प्रकाश : शेखावाटी के प्रमुख दुर्ग
10. श्री गोविंद राम हरितवाल (लेखक,संपादक स्थानीय पत्रिका) से मौखिक साक्षात्कार